प्रेस्टन वक्र

[स्रोत: द हिंदू](#)

प्रेस्टन वक्र किसी देश में [जीवन प्रत्याशा](#) और **प्रतिव्यक्ति आय** के बीच **अनुभवजन्य संबंध (empirical relationship)** को संदर्भित करता है, जिसे 1975 में **अमेरिकी समाजशास्त्री सैमुअल एच. प्रेस्टन** द्वारा प्रस्तावित किया गया था।

- वक्र से स्पष्ट है कि **अमीर देशों के लोगों का जीवन काल आमतौर पर गरीब देशों के लोगों की तुलना में लंबा होता है,** जो संभवतः स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, पोषण आदि तक बेहतर पहुँच के कारण होता है।
- जब किसी गरीब देश की प्रतिव्यक्ति आय बढ़ती है, तो उसकी जीवन प्रत्याशा में शुरुआत में काफी वृद्धि होती है।
    - उदाहरण के लिये, **भारत की प्रतिव्यक्ति आय** 1947 में 9,000 से बढ़कर 2011 में 55,000 रुपए हो गई, जबकि जीवन प्रत्याशा **32 से बढ़कर 66 वर्ष** हो गई।
- हालाँकि, प्रतिव्यक्ति आय और जीवन प्रत्याशा के बीच सकारात्मक संबंध एक निश्चित बिंदु के बाद समाप्त होने लगता है, क्योंकि **मानव जीवनकाल को अनिश्चित काल तक नहीं बढ़ाया जा सकता है।**
- **प्रेस्टन वक्र (Preston Curve)** द्वारा दर्शाया गया सकारात्मक संबंध **अन्य [विकास संकेतकों](#)** जैसे **[शिशु/मातृ मृत्यु दर](#)**, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल आदि पर भी लागू किया जा सकता है।

और पढ़ें: [लोरेन्ज़ वक्र और गिनी गुणांक](#)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/preston-curve